क्या दादा लेखराज को प्रजापिता ब्रह्मा कह सकते हैं?

ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा प्रकाशित त्रिमूर्ति शिव के चित्र को तो लगभग सभी ने देखा ही होगा। ब्रह्माकुमारियों के अनुसार परमपिता शिव परमात्मा 5000 वर्ष के मनुष्य सृष्टि-चक्र के अंत में अर्थात् वर्तमान पुरुषोत्तम संगमयुग में ब्रह्मा (उर्फ दादा लेखराज) द्वारा नई दुनिया की स्थापना करते हैं, शंकर द्वारा पुरानी दुनिया का विनाश करते हैं और विष्णु अर्थात् लक्ष्मी-नारायण द्वारा आने वाली नई दैवी दुनिया की पालना करते हैं। इस चित्र में भक्तिमार्गीय ब्रह्मा के स्थान पर दादा लेखराज को दिखाया गया है, किंतु सन् 1969 में दादा लेखराज के देहावसान के बाद, लगभग 47 वर्ष बीत जाने पर भी उन्हें यह पता नहीं है कि दादा लेखराज की तरह इस संगमयुग में शंकर या विष्णु की भूमिका कौन अदा करते हैं।

ब्रह्माकुमारियाँ यह मानती हैं कि उनके ब्रह्मा बाबा सन् 1969 से सूरज, चाँद, सितारों से पार स्थित सूक्ष्म वतन में सूक्ष्म शरीरधारी के रूप में निवास कर रहे हैं, किंतु ब्रह्माकुमारियों द्वारा प्रकाशित ज्ञान मुरली से यह सिद्ध होता है कि इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर प्रजापिता ब्रह्मा का वास्तविक पार्ट अदा करने वाली आत्मा इसी मनुष्य सृष्टि पर एक पतित तन में प्रैक्टिकली मौजूद होनी चाहिए। ब्रह्माकुमारी संस्था का यह भी मानना है कि सन् 1969 से निराकार शिव और अपना शरीर त्याग चुके दादा लेखराज की आत्मा हर वर्ष पूर्वनिर्धारित दिनों में ब्र.कु.दादी गुलज़ार के तन में प्रवेश कर अव्यक्त वाणी चलाती है। गुलज़ार दादी जी बचपन से ही एक पवित्र ब्रह्माकुमारी है, जबकि ब्रह्माकुमारियों द्वारा ही प्रकाशित ज्ञान मुरली से यह सिद्ध होता है कि शिव बाप पवित्र कन्या के तन में नहीं आते हैं।

वास्तव में, दादा लेखराज ब्रह्मा के द्वारा निराकार शिव ने मुखवंशावली ब्राह्मण वत्सों की रचना के लिए सन् 1969 तक केवल बेहद की माँ का पार्ट अदा किया और सन् 1976 से राम और कृष्ण की जन्मभूमि, शिव-शंकर भोलेनाथ की कर्मभूमि तथा पतितपावनी गंगा के लिए प्रसिद्ध उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक गाँव कम्पिल से किसी साधारण, पतित, अनुभवी मनुष्य शरीर रूपी रथ में प्रवेश कर गुप्त रूप से प्रजापिता ब्रह्मा अर्थात् पिता का पार्ट अदा कर रहे हैं और सच्चा गीता ज्ञान और राजयोग सिखा रहे हैं, जिसके लिए उन्होंने आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय की स्थापना की है।

ओम् शान्ति।